तरबूज की खेती कर किसान कमा सकते हैं अधिक लाभ: डॉ. आई. एन. शुक्ला

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉटर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में गुरूवार को कल्याणपुर स्थित सेजी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई. एन. शुला ने किसानों के लिए तरबूज उगाकर अधिक लाभ कमाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल है। कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उेार प्रदेश में 15.18 हजार हेटेयर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रथम स्थान पर है।

डॉटर शुला ने बताया कि पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है।

डा. शुला ने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है। इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। जिसे किसान भाई 20 मार्च तक वही कर सकते हैं। उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेटेयर बुआई करना चाहिए। बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें। इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेटेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

वोट के लिए लोगों के... पेज 02

हिंदी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

शुक्रवार, 04 मार्च, 2022 लखनऊ से प्रकाशित वर्ष : 08,

तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल : डॉ शुक्ला

यूपी मैसेंजर संवाददाता

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने किसानों हेतु तरबूज उजागर कमाए अधिक लाभ नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल है।

डॉक्टर शुक्ला ने कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रथम स्थान पर है। उन्होंने बताया की पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा,92ब्र पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन,0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है। उन्होंने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है ।डॉ शुक्ला ने बताया कि इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। जिसे किसान भाई 20 मार्च तक वही कर सकते हैं। उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई करना चाहिए। बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें।

इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

गुरुवार, 03-03-2022 अंक-61
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

तरबूज से किसान कमाएं अधिक लाभ

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में गुरुवार को कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने किसानों के लिए तरबूज की खेती से संबंधित एडवाइजरी जारी की है।

उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल है। क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रथम स्थान पर है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है। उन्होंने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है। डॉ. शुक्ला ने बताया कि इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। किसान 20 मार्च तक तरबूज की बुवाई कर सकते हैं। उन्होंने

तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई करना चाहिए। बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें। इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

न: उत्तरी कीव के 3 रिहायशी इलाकों में... 12

एनवाई सिनेमाज ने मेरठ में की एक अद्भुत सिनेमा... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 141
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews   janexpresslive   janexpresslive   www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | शुक्रवार | 04 मार्च, 2022

तरबूज की खेती कर किसान कमा सकते हैं अधिक लाभ: डॉ. आई. एन. शुक्ला

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में गुरूवार को कल्याणपुर स्थित सेब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई. एन. शुक्ला ने किसानों के लिए तरबूज उगाकर अधिक लाभ कमाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल है। कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रथम स्थान पर है।

डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है।

डा. शुक्ला ने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रुलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है। इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। जिसे किसान भाई 20 मार्च तक बुवाई कर सकते हैं। उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई करना चाहिए। बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें। इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:40 | देहरादून, गुरुवार , 03 मार्च, 2022 | पृष्ठ:08

तरबूज की पैदावारी कर कमाए अधिक मुनाफा: डॉ शुक्ला

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने किसानों हेतु तरबूज उजागर कमाए अधिक लाभ नामक एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल है डॉक्टर शुक्ला ने कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है जो देश में प्रथम स्थान पर है। उन्होंने बताया की पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा,92% पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन,0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है उन्होंने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन,विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है डॉ शुक्ला ने बताया कि इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है जिसे किसान भाई 20 मार्च तक वही कर सकते हैं उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई करना चाहिए बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • शुक्रवार • 4 मार्च • 2022

किसान तरबूज उगाकर कमाएं अधिक लाभ

सीएसए के सब्जी वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला की सलाह

कानपुर (एसएनबी)। किसान तरबूज उगाकर अन्य फसलों की अपेक्षा कहीं अधिक कमाई कर सकते हैं। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने तरबूज की खेती को लेकर किसानों के लिए सलाह जारी की है।

डॉ. शुक्ला के अनुसार गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कद्दू वर्गीय फसल तरबूज के उत्पादन में उप्र देश में प्रथम स्थान पर है। यहां 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में तरबूज की खेती की जाती है। उनके मुताबिक किसान तरबूज की बुवाई 20 मार्च तक कर सकते हैं। इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। उन्होंने कहा कि तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों में दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक व अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज के बीज का 3.5 से 4 किग्रा प्रति हेक्टेयर बुवाई करना चाहिए।

सीएसए के सब्जी वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला।

बुवाई के पूर्व बीजों को शोधित करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त हो सकता है।

गर्मी में स्वास्थ्य के लिए बेहतर है तरबूज का सेवन : गर्मी के मौसम में तरबूज का सेवन स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है। इसमें पानी की मात्रा अधिक होने के कारण गर्मियों में इसके सेवन से लूगर्मी से बचा जा सकता है। पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज में 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।